Shrimad Rajchandra Mission Delhi

# मुमुक्षु की विकास यात्रा का क्रम

## आधार - महर्षि वाल्मीकि रचित योग वशिष्ठ

**The Seven stages of evolution of a seeker (as described in Yog Vashishtha)**

| # | भूमिका (Stage) | विवरण (Description) | स्थिति (State) |
|---|---|---|---|
| 1 | **शुभेच्छा**<br>Auspicious resolve | I. जड़-चेतन विवेक = विवेक<br>II. संसार सुख के प्रति अरुचि = वैराग्य<br>III. शरीर-मन का मालिक = संयम<br>IV. मोक्ष अभिलाषी = मुमुक्षुता | मुमुक्षु, साधक, खोजी, आत्मार्थी |
| 2 | **विचारणा**<br>Reflection, Right enquiry | I. श्रवण<br>II. मनन | मुमुक्षु, साधक, खोजी, आत्मार्थी |
| 3 | **तनुमानसा**<br>Thinning of mental activities = attenuation | I. निदिध्यासन<br>II. सविकल्प समाधि | मुमुक्षु, साधक, खोजी, आत्मार्थी |
| 4 | **सत्त्वापत्ति**<br>Attainment of Self | I. निर्विकल्प समाधि<br>II. साधक अभी भी संचित, प्रारब्ध और आगामी कर्मों के आधीन होते हैं<br>III. सविकल्प समाधि में द्वैत मौजूद रहता है (जब निर्विकल्प समाधि में ठहरता नहीं) | ब्रह्मविद् |
| 5 | **असंसक्ति**<br>Unaffected, desirelessness, | I. कर्मों में अनासक्त भाव<br>II. कर्माधीनता के कारण निर्विकल्प समाधि टूटती है | ब्रह्मविद्वरा |
| 6 | **पदार्थ अभावना**<br>Oblectlessness - sees ‘Brahm’ everywhere | I. अद्वैत स्थिति (द्वैत का लय)<br>II. कर्ताभाव का विलय<br>III. संचित और आगामी कर्मों का क्षय<br>IV. प्रारब्ध अनुसार जीवन<br>V. दूसरों के प्रयास से समाधि से बाहर | ब्रह्मविद्वर्यन |
| 7 | **तुर्या**<br>Transcendence | I. मात्र समाधि<br>II. स्वरूप संवेदन में स्थिरता | ब्रह्म विद्वरिष्ठा |